शिक्षा दर्शन

(Education and Philosophy)

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

शिक्षा दर्शन

(Education and Philosophy)

डॉ. विवेक नाथ त्रिपाठी

नमूना • SAMPLE

अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
दिल्ली (भारत)

प्रकाशक

अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

हेड ऑफिस : ए-108, स्ट्रीट न0. 1/3,
कौशल पुरी, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9643620664, 8744955183
E-mail : adhyayapublishers@gmail.com,
adhyayapublishers@yahoo.com
Website : www.adhyayabooks.com

शिक्षा दर्शन (Education and Philosophy)

संस्करण : 2018
© लेखक
ISBN: 978-93-88688-00-0

इस सम्पादित पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं। जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं हैं।

भारत में प्रकाशित

वीरेन्द्र कुमार यादव 'अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स' के द्वारा प्रकाशित।

SAMPLE

दो शब्द

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन हैं यह एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया हैं जिसके कई आधार हैं जिसमें प्रमुख रूप से शिक्षा का दार्शनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आधार को शामिल किया जाता है। प्रस्तुत पुस्तक राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् के अधिनियम 2014 को ध्यान में रखकर विभिन्न भारतीय विश्व विद्यालयों के एम0 एड0 एवं बी0 एड0, एम0 ए0 शिक्षा शास्त्र के नवीनतम पाठ्यक्रम के आधार पर तैयार किया गया जिसकों सुविधा एवं अध्ययन के दृष्टिकोण से चार भागों में विभिक्त किया गया हैं प्रथम भाग शिक्षा एवं कुछ महत्वपूर्ण शैक्षिक बिन्दु द्वितीय भाग शिक्षा एवं दर्शन की पाश्चात्य विचार धारा, तृतीय भाग शैक्षिक एवं दार्शनिक चिन्तक चतुर्थ भाग– भारतीय दर्शन एवं भगवत गीता से सम्बन्धित विषय वस्तु को अत्यन्त सरल भाषा में लिखने का प्रयास किया गया हैं।

वर्तमान बदलते परिदृश्य में शिक्षा एवं दर्शन, शिक्षा एवं समाज भारतीय एवं पाश्चात्य दार्शनिक चिन्तक उनके शैक्षिक एवं दार्शनिक विचार का अध्ययन और उनके विचारों की वर्तमान में प्रासंगिकता का वर्णन अत्यन्त सरल भाषा में किया गया हैं। जिसका अध्ययन आवश्यक भी है।

अन्त में लेखक उन सभी विद्वानों के प्रति अभारी हैं जिनकी कृतियों से पुस्तक की रचना में सहायता ली गई है। साथ विभिन्न बेबसाइट पर उपलब्ध सहित्यों को भी पुस्तक में समाहित किया गया एवं उनकी सहायता ली गई उनके प्रति भी आभार ज्ञापति करता हैं।

पुस्तक के प्रकाशक अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स नई दिल्ली राकेश कुमार के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ अन्ततः अपने उन सभी गुरूओं को भी प्रणाम करता हूँ जिन्होंने ने इस पुस्तक की रचना के लिए निरन्तर प्रेरणा प्रदान की हैं। पुस्तक में यह प्रयास किया की अशुद्वियाँ न पर भूलवर्ष अशुद्वियों का होना स्वभाविक है। उसके लिए लेखक पाठकगड़ों से सुझाव आमत्रिंत करता है एवं क्षमा प्रार्थी हैं।

डॉ. विवेक नाथ त्रिपाठी

SAMPLE

नमूना • SAMPLE

विषय सूची

दो शब्द *v*

भाग–1 शिक्षा एवं कुछ महत्त्वपूर्ण शैक्षिक बिन्दु **1**

शिक्षा, शिक्षा का शाब्दिक अर्थ, शिक्षा का व्यंजनात्मक अर्थ, शिक्षा का संकुचित अर्थ, शिक्षा का व्यापक अर्थ, शिक्षा विश्लेषणात्मक अर्थ, शिक्षा का वास्तविक अर्थ, शिक्षा का दार्शनिक सम्प्रत्यय, शिक्षा का समाजशास्त्रीय सम्प्रत्यय, शिक्षा का राजनैतिक सम्प्रत्यय, शिक्षा का मनौवैज्ञानिक सम्प्रत्यय, शिक्षा की विशेषताएं, स्थान एवं काल के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा के रूप, औपचारिक शिक्षा, औपचारिक शिक्षा की विशेषताएं, अनौपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा की विशेषताएं, समायोजन का उद्देश्य, प्राचीन काल में शिक्षा के उद्देश्य, मध्यकाल में शिक्षा के उद्देश्य।

आधुनिक लोकतन्त्रीय भारत में शिक्षा के उद्देश्य

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य मुदालियर आयोग 1952 के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, कोठारी आयोग 1964–66 के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य स्थान के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य, व्यक्तिगत उद्देश्य, सामाजिक उद्देश्य।

भारतीय संविधान में शिक्षा सम्बन्धी प्रावधान

शिक्षा समवर्ती सूची में, निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा, शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश के समान अधिकार, धार्मिक शिक्षा/धार्मिक शिक्षा के विषय में स्पष्ट निर्देश, अल्पसंख्यको की शिक्षा की विशेष व्यवस्था, समाज के कमजोर वर्ग/पिछड़े वर्ग की शिक्षा, कृषि शिक्षा।

शैक्षिक अवसरों की समानता

नमूना SAMPLE

भारत में पिछड़ी जाति एवं स्त्री शिक्षा के सदंर्भ में शैक्षिक अवसरों की समानता, भावात्मक एकता की आवश्यकता शिक्षा और भावात्मक एकता, राष्ट्रीय एकता एवं भावात्मक एकता में अंतर, भारत में राष्ट्रीय एवं भावात्मक एकता को विकसित करने के लिए किए गए प्रयास।

सामाजिक परिवर्तन का अर्थ शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक परिवर्तन शिक्षा को प्रभावित करते हैं,

धर्म निरपेक्षता का अर्थ, उदयमान भारत में धर्म–निरपेक्षता, धर्म का अर्थ, हिन्दू धर्म का योगदान, व्यक्ति और समाज, व्यक्ति बनाम समाज, बालक के समाजीकरण में शिक्षा का कार्य, डायट (जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्था) डायट के कार्य, जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (D.P.G.P.) जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम के लक्ष्य एवं उद्देश्य–निरक्षरता उन्मूलन, निरक्षरता उन्मूलन के लिए किए गए प्रयास, निरक्षरता उन्मूलन में आनी वाली समस्या।

भाग–2 शिक्षा दर्शन की पाश्चात्य विचारधाराएं 29

1. दर्शन का अर्थ दर्शन का शाब्दिक अर्थ, दर्शन का विशिष्ट अर्थ, दर्शन का व्यापक अर्थ, दर्शन का भारतीय सम्प्रत्यय, दर्शन का पाश्चात्य सम्प्रत्यय, दर्शन की परिभाषा, दर्शन का क्षेत्र–तत्व मीमांसा ज्ञान मीमांसा, मूल्य एवं आचार मीमांसा। प्रस्तावना, दर्शन का अर्थ, दर्शन की परिभाषा, दर्शन का क्षेत्र, शिक्षा, शिक्षा का दर्शन से सम्बन्ध, दर्शन का शिक्षा के विभिन्न अंगों पर प्रभाव
2. शिक्षा और दर्शनशिक्षा का दर्शन से सम्बन्ध (Relation Between Education and Philosophy)
3. दर्शन शिक्षा के प्रमुख अंगों को प्रभावित करता है–, शिक्षा एवं दर्शन जीवन के अभिन्न अंग हैं–, शिक्षा के विभिन्न अंगों पर दर्शन के प्रभाव का विश्लेषण, शिक्षा के उद्देश्यों पर दर्शन का प्रभाव, दर्शन और पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियों पर दर्शन का प्रभाव, दर्शन और शिक्षक दर्शन और अनुशासन, दर्शन एवं पाठ्यपुस्तकें।

   आदर्शवाद (Idealism) आदर्शवाद की तत्वमीमांसा, आदर्शवाद की ज्ञान मीमांसा आदर्शवाद की आचारमीमांसा, आदर्शवाद का अर्थ, आदर्शवाद की परिभाषा, तत्वमीमांसा, आचारमीमांसा और ज्ञान मीमांसा के आधार पर आदर्शवाद की परिभाषा, आदर्शवाद के मूल सिद्धान्त आदर्शवाद और शिक्षा, आदर्शवाद और शिक्षा के उद्देश्य आदर्शवाद और पाठ्यक्रम, प्लेटो के अनुसार पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, आदर्शवाद और शिक्षक, आदर्शवाद और अनुशासन आदर्शवाद का आलोचनात्मक विश्लेषण, आदर्शवाद के सकारात्मक पहलू–, आदर्शवाद और प्लेटो, शिक्षा के उद्देश्य, प्लेटों के अनुसार पाठ्यक्रम, अनुशासन और प्लेटो।

प्रकृतिवाद (Naturalism) प्रकृतिवाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रकृतिवाद का जन्म, प्रकृतिवाद के सम्बन्ध में दार्शनिकों के विचार, प्रकृतिवाद की तत्वमीमांसा, ज्ञान मीमांसा, आचार मीमांसा, प्रकृतिवाद का अर्थ, प्रकृतिवाद की परिभाषा, प्रकृतिवाद के मूल सिद्धान्त, प्रकृतिवाद के उद्देश्यों से संबंधित शिक्षाविदों के विचार, मानवयंत्र को पूर्ण करने के सम्बन्ध में प्रकृतिवाद और पाठ्यक्रम, प्रकृतिवाद और शिक्षण विधियाँ, प्रकृतिवाद और शिक्षक, प्रकृतिवाद और अनुशासन, प्रकृतिवाद का आलोचनात्मक मूल्यांकन, प्रकृतिवाद के गुण प्रकृतिवाद के दोष, प्रकृतिवाद और रूसो।

यथार्थवाद (Realism) यथार्थवाद का अर्थ, यथार्थवाद की परिभाषा, यथार्थवाद के सम्बन्ध में दार्शनिकों के मत, यथार्थवाद का क्षेत्र–तत्वमीमांसा, ज्ञान–मीमांसा, आचारमीमांसा, यथार्थवाद के मूल सिद्धान्त, यथार्थवाद और शिक्षा, यथार्थवादी शिक्षा की प्रमुख विशेषताएं, यथार्थवादी शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य, यथार्थवाद और पाठ्यक्रम यथार्थवाद और शिक्षण विधियाँ, यथार्थवादी और शिक्षक, यथार्थवाद और अनुशासन, यथार्थवाद का मूल्यांकन।

प्रयोजनवाद (Pragmatism) प्रयोजनवाद का अर्थ, प्रयोजनवाद की तत्वमीमांसा, प्रयोजनवाद की ज्ञान मीमांसा, प्रयोजनवाद की आचार मीमांसा/मूल्य मीमांसा प्रयोजनवाद की परिभाषा, प्रयोजनवाद के मूल सिद्धान्त, प्रयोजनवाद के अनुसार शिक्षा, प्रयोजनवादी शिक्षा की मुख्य विशेषताएं, प्रयोजनवादी शिक्षा के उद्देश्य, प्रयोजनवाद और पाठ्यक्रम, प्रयोजनवाद और शिक्षण विधियाँ, प्रयोजनवाद और शिक्षक, प्रयोजनवाद और अनुशासन, प्रयोजनवाद और विद्यालय, प्रयोजनवाद का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव, प्रयोजनवाद और डी०वी० जीवन परिचय, डी०वी० के दार्शनिक विचार, डी०वी० के शैक्षिक विचार के महत्वपूर्ण तथ्य, डी०वी० और शिक्षा के उद्देश्य, डी०वी० और पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियाँ, डी०वी० और विद्यालय, अनुशासन, शिक्षक और शिक्षार्थी, डी०वी० के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव।

भाग–3 शैक्षिक एवं दार्शनिक चिन्तक 68

1. बरटैण्ड आर्थर विलियम्स रसेल दार्शनिक विचार, रसेल के अनुसार शिक्षा, शिक्षा के उद्देश्य पाठ्यक्रम, पूर्व प्राथमिक शिक्षा, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा, शिक्षण विधियाँ, रसेल के शैक्षिक विचारों का आधुनिक शिक्षा पर प्रभाव।
2. रूसो (Rousseav) जीवनवृत, रूसो के महत्वपूर्ण विचार, प्रकृति की ओर लौटो रुसो की प्रमुख रचनाएं, रूसो और शिक्षा का अर्थ, रूसो और शिक्षा के उद्देश्य, रूसो और शिक्षा का पाठ्यक्रम, रूसो और शिक्षण विधियाँ, रूसो के अनुसार अनुशासन, रूसो की निषेधात्मक शिक्षा, रूसो की निषेधात्मक शिक्षा के

सम्बन्ध में प्रोफेसर के विचार, आधुनिक शिक्षा पर रूसो के विचारों का प्रभाव।

3. पेस्टालॉजी (Pestalozzi) इनकी प्रमुख रचनाएं, पेस्टालॉजी के अनुसार शिक्षा का अर्थ, पेस्टालॉजी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य, उद्देश्य के बारे में इनके स्पष्ट विचार, शिक्षण–विधियाँ।

4. प्लेटो (Plato) (427 B.C.-347 B.C.) जीवन परिचय, निजी, प्लेटो की रचनाएं, प्लेटो का आदर्शवादी दर्शन, प्लेटो के शैक्षिक विचार, प्लेटो के अनुसार शिक्षा के अर्थ, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, स्त्रियों के लिए शिक्षा शिक्षण–विधियाँ। शिक्षक, अनुशासन, दास वर्ग की शिक्षा प्लेटो के शिक्षा–सिद्धान्तों की आलोचना, प्लेटो की शिक्षा को देन, निष्कर्ष।

5. अरस्तू(Aristole : 384-322 B.C.)जीवन इतिहास एवं कार्य, अरस्तू का शिक्षा दर्शन, अरस्तू एवं राज्य, कारणता का सिद्धान्त, आत्मा की अवधारणा, ईश्वर की अवधारणा, व्यवहारिकता नैतिकता का सिद्धान्त या नीतिशास्त्र राज्य की अवधारणा, विकासवाद का सिद्धान्त, सारांश।

स्वामी विवेकानन्द (Swami Vivekanand) जीवन वृत, स्वामी विवेकानन्द के सम्बन्ध में लोगों के विचार स्वामी जी का जीवन दर्शन, तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा, आचार मीमांसा, स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित मूल सिद्वान्त प्रमुख रचनाएं, शिक्षा का सम्प्रत्यय, शिक्षा की परिभाषा शिक्षा के मूल सिद्धान्त, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधियाँ, अनुशासन, शिक्षक, शिक्षार्थी।

फ्रोबेल (Froaebel) फ्रोबेल के शैक्षिक विचार, शिक्षा का सम्प्रत्यय, शिक्षा के उद्देश्य, फ्रोबेल और शिक्षा का पाठ्यक्रम, फ्रोबेल और शिक्षण विधियाँ फ्रोबेल और अनुशासन, कार्य और व्यापार, किण्डरगार्टन के गुण फ्रोबेल के शैक्षिक विचारों की आधुनिक शिक्षा में प्रासंगिकता।

महात्मा गाँधी (Mahatma Gandhi 1869-1948) शिक्षा का अर्थ, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधि अनुशासन और गाँधी जी, गाँधी जी और बेसिक शिक्षा, बेसिक शिक्षा के आधारभूत सिद्धान्त, बेसिक शिक्षा के उद्देश्य, बेसिक शिक्षा और पाठ्यक्रम, वर्तमान परिप्रेक्ष्य में गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित बेसिक शिक्षा का मूल्यांकन।

श्री अरविन्द घोष (Sri-Aurobindo Ghosh) सर्वांग दर्शन क्या है?, तत्वमीमांसा, ज्ञानमीमांसा, ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम, मूल्यमीमांसा, अरविन्द का शैक्षिक चित शिक्षा का उद्देश्य, ज्ञानेन्द्रियों का विकास, पाठ्यक्रम शिक्षण विधि, शिक्षार्थी, अनुशासन, मूल्यांकन।

मैरिया मॉन्टेसरी

जीवन, शिक्षा का सम्प्रत्यय, शिक्षा के उद्देश्य, शैक्षिक उपकरण।

भाग–4 भारतीय दर्शन एवं भगवतगीता 111

1. बौद्ध दर्शन और शिक्षा (Buddhist Philosophy and Education)विषय प्रवेश, बौद्ध साहित्य, महात्मा बुद्ध के उपदेश, अष्टांगिक मार्ग चार मूल सिद्धान्त, शिक्षा, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण–विधियाँ, अध्यापक–छात्र सम्बन्ध, मानवता और बौद्ध शिक्षा प्रणाली।
2. भारतीय दर्शनदर्शन का स्वरूप, दर्शन का विषय, दर्शन तथा फिलॉसफी, षड्दर्शन, भारतीय दर्शन का विकास, भारतीय दर्शन की विशेषताएँ; –(क) प्रयोजन का समानता (ख) उत्पत्ति की समानता (ग) निराशा में आशा का संदेश (घ) व्यक्ति एवं विश्व की नैतिक व्यवस्था में विश्वास (ड.) कर्मवाद में आस्था (च) व्यक्ति के हित के साथ सामाजिक हित पर ध्यान (छ) मानवतावादी दृष्टिकोण।
3. श्रीमद्भगवद्गीता, गीता साहित्य, भगवद्गीता के योग–विचार, कर्मयोग–अंहकार रहित हो कर्म करना ही कर्मयोग है, अनासक्त कर्म ही कर्मयोग है, निष्काम कर्म ही कर्मयोग है, निष्काम कर्म के दो अंग हैं, गीता के कर्मयोग की विशेषता, ज्ञानयोग, आत्मगत समत्व, भक्तियोग, शरणागत भक्त ही श्रेष्ठ योगी है, योग समन्वय, भक्ति, ज्ञान और कर्म तीनों समान साधन हैं। गीता तीन योगों का समन्वय करती है। भक्तियोग, गीता का यथार्थ आदेश ज्ञानभक्ति युक्त कर्म है, स्थितप्रज्ञ, पुरूषोत्तम (ईश्वर) अवतार, वैदिक धर्म दो प्रकार का।
4. जैन दर्शन जैन परम्परा, जैन साहित्य, दिगम्बर साहित्य, जैन दर्शन के सिद्धान्त–द्रव्य विचार, द्रव्य के भेद– जीवन द्रव्य, अजीव द्रव्य जीवन के भेद–(1) सांसारिक जीव, (2) मुक्त जीव अजीव द्रव्य–(1) पुद्गल, जीव का बन्धन तथा मोक्ष, मोक्ष, मोक्ष की समीक्षा, मोक्ष मार्ग, सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्चरित्र, प्रमाण विचार, केवलज्ञान, समीक्षा।
5. वैशेषिक दर्शन वैशेषिक का इतिहास और साहित्य, पदार्थ, पदार्थ के भेद। द्रव्य, द्रव्य के भेद, पृथ्वी, जल का रूपा तेज, आत्मा, गुण, कर्म, विशेष, समवाय, संयोग व समवाय में भेद, अभाव, परमाणुवाद, कारण, कारण के प्रकार।
6. मीमांसा दर्शन मीमांसा के मुख्य आचार्य तथा उनकी कृतियाँ, मीमांसा के सिद्धान्त, ज्ञान के स्वरूप और भेद, मीमांसा तथा न्याय के मतभेद, प्रमाण की संख्या, प्रत्यक्ष के भेद, अनुमान, उपमान, शब्द, वेद अपौरुषेय है, धर्म–विचार, विधि, अपूर्व विधि परिसंख्या विधि, कर्म–सिद्धान्त, यज्ञ और अपूर्व, अपूर्व, ईश्वर–विचार, मोक्ष–विचार।

नमूना SAMPLE

नमूना • SAMPLE

भाग–1

शिक्षा

शिक्षा का शाब्दिक का अर्थ, शिक्षा का व्यंजनात्मक अर्थ, शिक्षा का संकुचित अर्थ, शिक्षा का व्यापक अर्थ, शिक्षा का विश्लेषणात्मक अर्थ, शिक्षा का वास्तविक अर्थ, शिक्षा का दार्शनिक सम्प्रत्यय, शिक्षा का समाजशास्त्रीय सम्प्रत्यय, शिक्षा का राजनैतिक सम्प्रत्यय, शिक्षा का मनौवैज्ञानिक सम्प्रत्यय, शिक्षा की विशेषताएं, स्थान एवं काल के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य, शिक्षा के रूप, औपचारिक शिक्षा, औपचारिक शिक्षा की विशेषताएं, अनौपचारिक शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा की विशेषताएं, शिक्षा का उद्देश्य, प्राचीन काल में शिक्षा के उद्देश्य, मध्यकाल में शिक्षा के उद्देश्य।

शिक्षा

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। यह मानव की अन्तर्निहित शक्तियों के विकास का सशक्त माध्यम है। सनातन काल से ही शिक्षा का लक्ष्य मानव का निर्माण करना रहा है। मानव जाति के विकास का आधार ही शिक्षा है। शिक्षा जीवन से अलग नहीं है। शिक्षा जीवन का एक पक्ष है। शिक्षा व्यक्ति की अन्तर्निहित शक्तियों को उजागर कर उसके देवत्य का दर्शन कराती है।

मानवीय मूल्यों के अनुभूति का उसे अवसर प्रदान कराती है और स्वानुभूति का मार्ग प्रशस्त करती है। वास्तव में शिक्षा बालक के लिए जन्म से पूर्व एक तेजस्वती अंकुरण का निर्माण एवं जन्म के बाद एक सुन्दर पौधे के निर्माण में सहायक है। शिक्षा को विभिन्न शिक्षाविदों ने विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया एवं परिभाषित किया। शिक्षा के अर्थ को निम्न समप्रत्यों के रूप में देखा जा सकता है :

पाश्चात्य संदर्भ में शिक्षा का अर्थ, शिक्षा का शाब्दिक अर्थ, शिक्षा का व्यंजनात्मक अर्थ, शिक्षा का संकुचित अर्थ, शिक्षा का व्यापक अर्थ, शिक्षा विश्लेषणात्मक अर्थ, शिक्षा का वास्तविक अर्थ, शिक्षा का दार्शनिक सम्प्रत्यय, शिक्षा का समाजशास्त्रीय सम्प्रत्यय, शिक्षा

SAMPLE

का राजनैतिक सम्प्रत्यय, शिक्षा का मनोवैज्ञानिक सम्प्रत्यय मुख्य रूप से हमें शिक्षा के शाब्दिक, संकुचित एवं व्यापक अर्थ को जानना चाहिए।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ (Etmological Meaning of Education)

शिक्षा शब्द संस्कृत भाषा की शिक्ष् धातु में अ प्रत्यय लगाने से बना हैं। शिक्ष् का अर्थ है सीखना और सिखाना। इसलिए शिक्षा को सीखने और सिखाने की प्रक्रिया के रूप में प्रयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में शिक्षा अंग्रेजी भाषा के एजूकेशन शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के एडूकेटम, एडूसीयर, एडूकेयर शब्द से हुई। जिसमें तीनों सम्प्रत्ययों को अलग–अलग अर्थ बताया गया 'एजूकेटम' का अर्थ (अन्तर्निहित शक्तियों को बाहर लाने का कार्य), 'एडूसीयर' का अर्थ विकसित करना अर्थात् उस अन्तर्निहित शक्ति का पूर्ण विकास करना। सार रूप में व्यक्ति की अन्तःनिहित शक्तियों को बाहर निकालना उनको विकसित करने की प्रक्रिया के रूप में शिक्षा के अर्थ को स्वीकार किया जाना है।

शिक्षा का संकुचित अर्थ

शिक्षा के संकुचित विचार को मानने वाले प्रमुख शिक्षाविद् मैंकेजी, प्रोफेसर डीवर, थामसन का नाम आता है। ये मूलरूप से शिक्षा के विशिष्टीकरण की बात करते हैं, और विशिष्टकरण करना ही शिक्षा का संकुचित अर्थ है। मूलरूप से संकुचित अर्थ के अन्तर्गत विद्यालयों अथवा परम्परागत रूप से दी जाने वाली शिक्षा को संकुचित शिक्षा कहा जाता है। इसमें एक विशेष प्रकार/नियन्त्रित वातावरण का निर्माण करके नियन्त्रित पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों के माध्यम से अपनी प्रचलित सभ्यता एवं संस्कृति को अगले पीढ़ी तक हस्तान्तरित करने का प्रयास किया जाता है।

शिक्षा का व्यापक अर्थ

अपने व्यापक अर्थ में शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली एक प्रक्रिया है। जिसकी कोई सीमा नहीं होती है। इस शिक्षा के अन्दर संसार के प्रत्येक व्यक्ति एक समय में व्यक्ति से व्यक्ति, व्यक्ति से समाज और समाज से व्यक्ति औपचारिक अथवा अनौपचारिक रूप से कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। इसे व्यापक शिक्षा की विचारधारा के रूप में स्वीकार किया जाता है।

व्यापक अर्थ में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली एक सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन कर के किया जाता है, और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते रहते हैं।

शिक्षा की परिभाषा

जिस प्रकार शिक्षा के अर्थ को विभिन्न दृष्टिकोण एवं सम्प्रत्यय के रूप में अध्ययन

किया जाता है उसी प्रकार शिक्षा की परिभाषा भी विभिन्न दृष्टिकोण से विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित किया है हालांकि इनकी परिभाषाओं द्वारा बताए गए शिक्षा के अर्थ में कोई अन्तर नहीं होता है लेकिन वर्गीकरण करके अध्ययन करना सरल होता है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए शिक्षा की विभिन्न परिभाषाएं विभिन्न दृष्टिकोण को आधार बनाकर दी जा सकती है।

1 संकुचित दृष्टिकोण से शिक्षा की परिभाषा

2 व्यापक दृष्टिकोण से शिक्षा की परिभाषा

3 दार्शनिक दृष्टिकोण से शिक्षा की परिभाषा

4 सामाजिक दृष्टिकोण से शिक्षा की परिभाषा

शिक्षा की प्रमुख परिभाषाएं निम्न हैं।

आरगेनाइजेशन आफ सेकेण्डरी स्कूल्स रिपोर्ट के अनुसार :

''शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति के ज्ञान, रूचियों, आदर्शों, आदतों तथा शक्तियों का विकास करना है, जिसके द्वारा उसे अपना उचित स्थान प्राप्त हो सके तथा वह इस स्थान का सदुपयोग कर स्वयं तथा समाज को पवित्र उद्देश्यों की ओर ले जाएं।''

रेमाण्ट के अनुसार– ''शिक्षा उस विकास का नाम है जो शैशवस्था से प्रौढ़ अवस्था तक होता ही रहता है अर्थात् शिक्षा वह क्रम है जिसमें मानव अपने को आवश्यकतानुसार नैतिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है।''

जी.एच. थामसन के अनुसार– ''शिक्षा एक विशेष प्रकार का वातावरण है जिसका प्रभाव बालक के चिन्तन, दृष्टिकोण तथा व्यवहार करने की आदतों पर स्थायी रूप से परिवर्तन के लिए डाला जाता है।''

जॉन डी.वी. के अनुसार– ''शिक्षा अनुभवों के पुनर्निर्माण की एक निरन्तर प्रक्रिया है जो जीवन में सहायक होती है। यह व्यक्ति में निहित सभी क्षमताओं का विकास करती है। जो उसे अपने वातावरण को नियंत्रित करने में तथा अपनी योग्यताओं को विकसित करने में समर्थ बनाती है।''

व्यापक अर्थों में शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास, उसके ज्ञान एवं कला कौशलों में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृति एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

संकुचित अर्थ में शिक्षा किसी समाज में एक निश्चित समय तथा निश्चित स्थानों (विद्यालयों) में सुनियोजित ढंग से चलने वाली वह सोद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि

एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और इस प्रकार उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है। इसके द्वारा व्यक्ति एवं समाज दोनों निरन्तर विकास करते हैं।

शिक्षा की विशेषताएं

1 शिक्षा व्यक्ति की सम्पूर्ण शक्तियों का विकास है।

2 शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।

3 शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।

4 शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसमें बालक के ज्ञान, चरित्र तथा व्यवहार पर बल दिया जाता है।

5 शिक्षा एक द्विमुखी (शिक्षक, छात्र) प्रक्रिया है।

6 शिक्षा एक त्रिमुखी (शिक्षक, छात्र, पाठ्यक्रम) प्रक्रिया है।

7 शिक्षा एक सोद्देश्य प्रक्रिया है।

8 शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है।

9 शिक्षा औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों रूपों से सम्पादित की जाती है।

स्थान एवं काल के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा से यह आशा की जाती है कि यह संतुलित मानव का विकास करे बालकों को समाज के लिए लाभप्रद कार्य को करने और सामूहिक जीवन में भाग लेने के लिए तैयार करे –**जवाहर लाल नेहरू**

परन्तु आज समाज की यह आवश्यकता है कि शिक्षा के द्वारा ऐसे नागरिकों का निर्माण किया जाए जो मानवीय मूल्यों को बरकरार रख सके, बल्कि सम्पूर्ण आधुनिक ज्ञान–विज्ञान और तकनीकी का इस प्रकार सदुपयोग हो जिससे भारत की सांस्कृतिक विरासत अक्षुण्य रहे। मनुष्य एक प्रगतिशील प्राणी है शिक्षा के उद्देश्यों का सम्बन्ध उसकी प्रगति से होना चाहिए तभी तो डी.वी. ने कहा है कि– ''शिक्षा का लक्ष्य एक असहाय प्राणी के विकास में सहायता देना है, जिससे कि वह सुखी नैतिक तथा कुशल बन सके।''

वास्तव में शिक्षा का उद्देश्य एक ऐसा कथन होता है जो व्यक्ति में वांछित परिवर्तन की आदर्श स्थिति की ओर संकेत करता है, ऐसी आदर्श स्थिति जिसे सीमा में नहीं बांधी जा सकती।

किसी भी समाज की शिक्षा के उद्देश्य मूलरूप से उस समाज एवं राष्ट्र के जीवन दर्शन पर आधारित होते हैं। इसके अतिरिक्त उस राष्ट्र की सभ्यता संस्कृति एवं आर्थिक ढांचा भी शिक्षा के उद्देश्यों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इन आधारों पर शिक्षा के मुख्य उद्देश्य निम्न हैं :

AMIT SAMPLE

1 मानसिक विकास का उद्देश्य

2 सामाजिक विकास का उद्देश्य

3 सांस्कृतिक विकास का उद्देश्य

4 नैतिक एवं चारित्रिक विकास का उद्देश्य

5 व्यावसायिक विकास का उद्देश्य

6 शासन तन्त्र एवं नागरिकता की शिक्षा का उद्देश्य

7 राष्ट्र की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति का उद्देश्य

8 आध्यात्मिक चेतना के विकास का उद्देश्य

9 समायोजन का उद्देश्य

10 शारीरिक विकास का उद्देश्य

हम सभी जानते हैं कि मानव विकास की विभिन्न अवस्थाएं होती हैं। उसके जीवन के मुख्य रूप से तीन पक्ष बताए गए हैं प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक। इसमें मानव विकास के काल (समय) के आधार पर भी शिक्षा के उद्देश्य का निर्धारण किया गया है।

1 प्राचीन काल में शिक्षा के उद्देश्य

2 मध्यकाल में शिक्षा के उद्देश्य

3 वर्तमान काल में शिक्षा के उद्देश्य

प्रमुख शिक्षाविद् डॉ. अल्तेकर ने प्राचीन शिक्षा के उद्देश्यों को आठ भागों में बाँटकर अध्ययन किया है।

1 पावनता तथा पवित्रता की भावना

2 चरित्र का निर्माण

3 व्यक्तित्व का विकास

4 नागरिक एवं सामाजिक भावना

5 सामाजिक कुशलता में वृद्धि और राष्ट्रीय संरक्षण व प्रसार चितवृत्तियों का विरोध तथा ईश्वर भक्ति एवं उपासना पर बल शिक्षा के उद्देश्य हैं।

मध्यकाल में शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा का चाहे वह प्राचीन काल रहा हो या मध्यकाल या वर्तमान काल। शिक्षा उस समय प्रचलित धर्म, दार्शनिक विचारधारा, आडम्बरों, रूढ़ियों से प्रभावित रही है। इस प्रकार मध्यकाल की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य मुस्लिम धर्म का प्रचार व प्रसार करना है। मध्यकाल में प्रचलित यूसुफ हुसैन ने अपनी पुस्तक मुस्लिम काल में शिक्षा में ज्ञान के निम्न उद्देश्य बताए हैं :

SAMPLE

1 ज्ञान में वृद्धि करना (Expansion of Knowledge)

2 चरित्र का निर्माण करना (Formation of Character)

3 नैतिक विकास करना (Moral Development)

4 राजनैतिक व सामाजिक क्रम की व्याख्या (Organisation of Political and Social System)

5 मुस्लिम धर्म का प्रचार एवं प्रसार करना (Propogation and Spread of Muslim Religion)

6 मुस्लिम संस्कृति का संरक्षण व प्रसारण करना (Preservation and Spread of Muslim Culture)

आधुनिक लोकतन्त्रतीय भारत में शिक्षा के उद्देश्य (Aims of Education in Present Democratic in India)

मूल रूप से भारत की आधारशिला स्वतन्त्रता, समानता एवं न्याय के सिद्धान्तों पर रखी गई है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज का समन्वित विकास इन्हीं सिद्धान्तों पर करना लोकतन्त्र का धर्म माना गया है। अतः लोकतन्त्र की सफलता के लिए शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण आवश्यक हो जाता है। शिक्षा के कुछ ऐसे उद्देश्य जो हर काल में प्रभावी रहे है चूंकि शिक्षा को मानव विकास का मूल साधन माना जाता है और शिक्षा द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास करना भी है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए आधुनिक भारत में शिक्षा के निम्न उद्देश्यों को शामिल किया गया है।

शारीरिक विकास, मानसिक विकास, वैयक्तिक एवं सामाजिक विकास, सांस्कृतिक सहिष्णुता का विकास, नैतिक एवं चारित्रिक विकास, व्यावसायिक विकास, लोकतन्त्र और लोकतन्त्रीय नागरिकता की शिक्षा, जनसंख्या, शिक्षा, पर्यावरण शिक्षा, धार्मिक सहिष्णुता की शिक्षा इत्यादि उद्देश्य बताए गए हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न आयोग, शैक्षिक समितियों, शिक्षा के उद्देश्यों से सम्बन्धित अपने सुझाव दिये हैं।

विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य–

1. छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना।
2. छात्रों में नैतिकता सद्व्यवहार एवं आदर्श नागरिकता के गुणों का विकास करना।
3. प्रजातन्त्र की सफलता के लिए कुशल नागरिकों का निर्माण करना।
4. विभिन्न व्यवसाय कृषि, वाणिज्य, राजनीति तथा प्रशासन हेतु उचित नेतृत्व प्रदान करना।

मुदालियर आयोग 1952 के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य–

1. प्रजातान्त्रिक नागरिकता का विकास करना।
2. व्यावसायिक कुशलता का विकास करना।
3. व्यक्तित्व का विकास।